जिसने यीशु मसीहा के मृत्यु से जी उठने की सत्यता तथा उसे अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता की सत्यता को नहीं स्वीकार किया, सीधा नरक चला जाऐगा। वचन कहता है, कि यदि तू अपने मुँह से यीशू को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया तो तु निश्चय उद्धार पाऐगा।(रोमियों १०:९)

नरक में नतीजा बड़ा भयावह है, क्योंकि वहाँ आत्माओं को तड़पाया जाता है और ये आत्माएँ सब कुछ महसूस करती है जैसे शरीर में जीवित रहने के समय इस पृथ्वी पर।

परमेश्वर आत्मा है और सच्चाई से उनकी आराधना की जाए। उसकी आराधना के स्थान पर हम किसी और को नहीं रख सकते। आदमी से आदमी उत्पन्न होता है।भेड़ से भेड़ उत्पन्न होता है। पर जब तक मनुष्य आत्मा से पैदा न हुआ हो, हम उसकी आराधना नहीं कर सकते है।

यीशु आज बुलाता है, मृत्यु से जय लाभ करके हमे भी मृत्यु से जय दिलाने, जो हमारा अंतिम शत्रु है।

प्रभु को जीवित रहते वक्त पुकारिए। वही आपको बचाएगा।

क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें तो पापो के लिए फिर कोई बलिदान बाकी नहीं।(इब्रानियों १०:२६. २७)

आज आपको यह वरदान प्राप्त हुआ है, तो उसे ग्रहण कर लो क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीहा में अनंत जीवन है।(रोमियो ६:२३)

हम सब कहते है, ईश्वर प्रेम हैं, लेकिन कैसे जाने ?

हम पेड़ को पहचानते है फल से, ईश्वर को पहचानते है, प्रेम से। इसलिए ईश्वर ने मनुष्य के लिए सब कुछ दिया, क्योंकि पाप का प्रायश्चित खुन के द्वारा, और जीवन खुन मे है और पाप से बचाने के लिए अपना खुन भी दिया।

एक उदाहरण :-

अगर आपका बच्चा कुछ बुरा काम किया और जन साधारण उसको पिट रहे है। आप उसके पिताजी होकर उसे क्या बचाने नही जाएगें ? बचाते-बचाते भ्लिक के पिटाई के द्वारा अगर आपकी मृत्यु हो जाती है, क्या आपका पुत्र फिर से उस बुरे काम को दोहराएगा, या अनुताप करेगा ? आप ज़रुर यह कहेंगे कि वह अनुताप करेगा। अनुताप करके वह सही रास्ते पर चलेगा।

इसी प्रकार जिस दण्ड को हमे भोगना था, पाप के कारण, वह दण्ड स्वयं परमेश्वर प्रभु यीशु मसीहा क्रुस पर उठाया और तीसरे दिन जी उठा।

हमे अनुताप ज़रुर करके यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार कर लेना अवश्य है। कहीं देर न हो जाए। यीशु जल्दी आने वाला है।

अगर आप इसमें सहमत हैं, तो यह प्रार्थना किजिए। पिता परमेश्वर, मैं पापी हुँ। मेरे पाप के लिए यीशु बलिदान हुऐ और तीसरे दिन जी उठे। मैं मुँह से स्वीकार करता हु, दिल में विश्वास करता हूँ। मुझे अपना बना लिजिए। यीशु के नाम से, आमीन।

BETHEL APOSTOLIC ASSEMBLIES

Barbetia, Koushallya, Kharagpur

PASTOR

Dr. T. Pradhan

Contact No. : Mob. :9474305487
8967940831,9434959994

Website:bethelapostolicassemblies.com

केवल मार्ग-यीशु मसीहा

प्रिय पाठको,

जो भी वस्तु हम पृथ्वी पर, आकाश में, जल में और जल के नीचे देखते है, इन मे से ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे परमेश्वर ने न बनाया हो। ऐसे महान परमेश्वर की तुलना भला किससे कि जा सकती है ? किस मुर्ति से उसकी तुलना करोगे ? परमेश्वर कहता है, स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है, तुम मेरे लिए कैसा भवन बनाओगे, और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान होगा ? ये सब वस्तुऐं मेरे ही हाथ की बनाई हुई हैं, इंसलिए ये सब मेरा ही है। परन्तु मैं उसी की ओर दृष्टि करुँगा जो दीन और खेदित मन का हो, और मेरा वचन सुनकर थरथाराता हो। (यशायाह ६६:१,३)।

अगर परमेश्वर ने उन सब चीजों को बनाया, तो क्या वह अपने लिए मंदिर नही बना सकता ? ध्यान रहे, उस परमेश्वर के विश्राम के लिए कौन सा स्थान बनाओगे ? हमें अपनी हाथों से बनाए हुए मुर्ति को परमेश्वर नहीं समझना चाहिए।

परमेश्वर ने जो कुछ भी बनाया उन सबसे श्रेष्ठ मनुष्य को बनाया। वचन कहता है, "उसने मनुष्य को अपने स्वरुप के अनुसार अपनी समानता मे बनाया" (उत्पति १:२६) पर मनुष्य ने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया। उससे पाप पृथ्वी पर बढ़ता गया और फैल गया। मनुष्य मिट्टी से बनायां गया है और मिट्टी में ही मिल जाता है। पाप के कारण मृत्यु आई। मनुष्य बुद्धिमान होने का दावा तो करता है, पर वास्तव मे मूर्ख ही हैं। मनुष्य अपने जीवन भर मृत्यु के डर से जकड़ा रहता है।

परन्तु परमेश्वर अपनी बनाई हुई मनुष्य से प्यार करता है और मनुष्य को उस पाप तथा अनंत मृत्यु की दशा से बचाने के लिए स्वर्ग से पृथ्वी तक मार्ग बनाया। और इसी रास्ते से पृथ्वी से स्वर्ग तक मनुष्य जा सकता है।